॥ आरती श्री दुर्गा जी की ॥
Aarti Shri Durga Ji Ki

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी तुम को निस दिन ध्यावत
मैयाजी को निस दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ॥ जय अम्बे गौरी ॥१ ॥

माँग सिन्दूर विराजत टीको मृग मद को ।मैया टीको मृगमद को
उज्ज्वल से दो नैना चन्द्रवदन नीको ॥ जय अम्बे गौरी ॥२ ॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर साजे । मैया रक्ताम्बर साजे
रक्त पुष्प गले माला कण्ठ हार साजे ॥ जय अम्बे गौरी ॥३ ॥

केहरि वाहन राजत खड्ग कृपाण धारी । मैया खड्ग कृपाण धारी
सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुख हारी ॥ जय अम्बे गौरी ॥४ ॥

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती । मैया नासाग्रे मोती
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति ॥ जय अम्बे गौरी ॥५ ॥

शम्भु निशम्भु बिडारे महिषासुर घाती । मैया महिषासुर घाती
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती ॥ जय अम्बे गौरी ॥६ ॥

चण्ड मुण्ड शोणित बीज हरे । मैया शोणित बीज हरे
मधु कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे गौरी ॥७ ॥

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी । मैया तुम कमला रानी
आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे गौरी ॥८ ॥

चौंसठ योगिन गावत नृत्य करत भैरों । मैया नृत्य करत भैरों
बाजत ताल मृदंग और बाजत डमरू ॥ जय अम्बे गौरी ॥९ ॥

तुम हो जग की माता तुम ही हो भर्ता । मैया तुम ही हो भर्ता
भक्तन की दुख हर्ता सुख सम्पति कर्ता ॥ जय अम्बे गौरी ॥१० ॥

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी। मैया वर मुद्रा धारी
मन वाँछित फल पावत देवता नर नारी॥ जय अम्बे गौरी ॥११ ॥

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती। मैया अगर कपूर बाती
माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योती॥ बोलो जय अम्बे गौरी ॥१२ ॥

माँ अम्बे की आरती जो कोई नर गावे। मैया जो कोई नर गावे
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पावे॥ जय अम्बे गौरी ॥१३ ॥

॥ देवी वन्दना ॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम : ॥

॥ इति आरती श्री दुर्गा जी सम्पूर्णम ॥